टिप्पणी

2. उपमेय कहा जाता है–

(क) जिसकी तुलना की जाए ☐ (ख) जिससे तुलना की जाए। ☐

(ग) जिसका आरोप हो। ☐ (घ) जो एकरूप हो। ☐

3. नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थानों को उनके सामने कोष्ठक में दिये गए दो विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए:

(क) पश्चिम के लोग .................... के बल पर ही हर क्षेत्र में विकास कर सके हैं। (परिश्रम/सुविधाओं)

(ख) परिश्रम न करने पर यदि हम असफल हुए तो इसके लिए .................... दोषी हैं। (भगवान/परिस्थितियाँ/हम स्वयं)

(ग) कर्मरूपी .................... (भाग्य/तेल) के बिना भाग्यरूपी .................... (दीप/भाग्य) नहीं जल सकता।

(घ) .................... बनाने की अपेक्षा .................... बनाने में अधिक परिश्रम करना पड़ता है। (साँचा/मूर्ति)

## 4.2.3 अंश-3

आइए, हाशिए पर दिए गए कविता के तीसरे अंश को एक बार फिर से ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं।

आपने एक कहानी शायद पढ़ी या सुनी होगी जिसमें एक व्यक्ति के तीन बेटे आपस में लड़ते–झगड़ते रहते थे। उनके झगड़े से दुखी पिता ने एक दिन उन्हें बुलाया और तीनों के हाथ में एक–एक लकड़ी देकर उसे तोड़ने को कहा। तीनों ने अपने–अपने हाथ में आई अकेली लकड़ी को आसानी से तोड़ दिया। फिर उस व्यक्ति ने अपने बेटों को तीन–तीन लकड़ियाँ देकर कहा कि इन लकड़ियों को एक साथ मिलाकर तोड़ो। पिता की आज्ञानुसार बेटों ने उन लकड़ियों को इकट्ठा करके तोड़ने की चेष्टा की पर असफल रहे। यह कहानी हमें क्या शिक्षा देती है? यही कि एकता में बल है। कविता में भी देशवासियों को एक होकर रहने के लिए कहा गया है।

आओ, मिलें सब देश-बांधव हार बनकर देश के,<br>साधक बनें सब प्रेम से सुख-शांतिमय उद्देश्य के।<br>क्या सांप्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो!<br>बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो?

हम सब जानते हैं कि भारत अनेक धर्मों, जातियों एवं संप्रदायों का देश है। जब तक सब लोग एकजुट होकर देश के विकास के लिए कार्य नहीं करेंगे, तब तक देश गुलामी, गरीबी और पिछड़ेपन से मुक्त नहीं हो सकता। इसलिए इस अंश में कवि कहता है–

देशवासियो! माना कि हम अलग–अलग जातियों व संप्रदायों से जुड़े हुए हैं, पर भारत के नागरिक होने के नाते हम सब भाई–भाई हैं। इसलिए आओ, सब मिलकर देश को एकता के सूत्र में बाँधों और सुख–शांतिमय उद्देश्य को पूरा करने के लिए काम करें। सुख कैसे मिलेगा? आज़ादी से। शांति कैसे आएगी? गरीबी दूर होने से। गरीबी दूर कैसे होगी? गरीबी दूर होगी अपना शासन स्थापित करके। इसके लिए हमें एक होकर संघर्ष

करना पड़ेगा। समृद्धि और शांति लाने के लिए आओ, हम मिलजुल कर कठिन परिश्रम करें। कवि कुछ प्रश्नों के रूप में देश की जनता को एक होने के लिए कहता है। वह पूछता है कि क्या हम लोगों की जाति, धर्म, संप्रदाय अलग–अलग होने पर भी हम एक नहीं हो सकते? कवि कहना चाहता है कि इन आधारों पर भिन्नता एकता के मार्ग में बाधक नहीं है। हम एक देश के होने के नाते एक हो सकते हैं। इसी तरह वह कहता है कि क्या अलग–अलग प्रकार के फूलों को इकट्ठा करके एक माला नहीं बनाई जा सकती? आशय है, बनाई जा सकती है। जिस प्रकार यह हो सकता है, वैसे ही हम सब भी एक हो सकते हैं।

चित्र 4.5

कविता के इस अंश में कवि ने पुनः एक दृष्टांत का उपयोग किया है, वह है– 'बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो?' यह दृष्टांत कवि के किस कथन के उदाहरण स्वरूप आया है। जी हाँ, कवि पहले यह कह चुका है कि धर्म, संप्रदाय, मत और जाति की भिन्नता का होना किसी भी देश के विकास में बाधक नहीं बन सकती। कवि ने एकता को गले का हार कहा– यहाँ रूपक है। इसके बाद कवि अपनी बात का तर्क देते हुए कहता है कि क्या अनेक प्रकार के फूलों से एक माला नहीं बन सकती? बन सकती है, और बेहतर माला बन सकती है। ठीक उसी प्रकार हम अनेक भाषाएँ बोलने वाले विभिन्न धर्मों के अलग–अलग प्रदेशों में रहने वाले लोग मिलकर देश को एक बनाकर उसे बेहतर ढंग से मज़बूत कर सकते हैं। वैसे भी भारत को अनेकता में एकता का देश कहा जाता है।

चित्र 4.6

## क्रियाकलाप-4.2

आप अपने आस–पास के कुछ ऐसे लोगों को अवश्य जानते होंगे, जो पहले बहुत गरीबी या भयंकर विपत्तियों से घिरे हुए थे, पर आज वे खुशहाल या सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। ऐसे कम–से–कम दो लोगों के बारे में उल्लेख कीजिए जिन्होंने कठिनाइयों का सामना करते हुए सफलता प्राप्त की।

.............................................................................................................

.............................................................................................................

.............................................................................................................

टिप्पणी

## 4.3 भाव-सौंदर्य

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने देश की निराश, हताश तथा निष्क्रिय जनता का आह्वान किया है। कवि देश की जनता में नवीन उत्साह का संचार करके उसे कर्मशील बनाना चाहता है। कवि की इच्छा है कि देश न केवल अंग्रेज़ों की गुलामी से मुक्त हो, बल्कि मुक्त होकर आगे बढ़े, विकास करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कवि विभिन्न संप्रदायों, मतों तथा धर्मों आदि के बीच एकता कायम करने की आवश्यकता पर भी बल देता है। यह कविता इन सब बातों की अभिव्यक्ति बहुत ही प्रभावशाली ढंग से करती है। इन सब बातों के साथ यह कविता जिस समय में लिखी गयी थी, उस समय से आगे बढ़कर आज भी हमारा मार्गदर्शन करने में सक्षम है।

## 4.4 भाषा-सौंदर्य

आपने प्रतिकूल परिस्थितियों के सामने निराश और हताश हो जाने वाले लोगों को देखा होगा। ऐसे लोगों को भी देखा होगा जो इन निराश, हताश लोगों को उत्साहित करते हैं, निराशा से उबारते हैं। निराश, आलसी तथा अकर्मण्य लोगों को कर्म के लिए प्रेरित करते समय विशेष प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जाता है। आपने जो कविता पढ़ी उसकी भाषा–शैली भी ऐसी ही है। कवि देश की जनता का उद्‌बोधन करके उसका आह्वान करता है। आप जानते हैं उद्‌बोधन और आह्वान में क्या अंतर है? किसी व्यक्ति, समूह अथवा समाज को संबोधित करना उद्‌बोधन है। कवि देश की जनता का उद्‌बोधन कर रहा है। किसी बड़े उद्‌देश्य हेतु कर्म के लिए प्रेरित करना आह्वान कहलाता है। आह्वान के लिए यह आवश्यक है कि उसमें उद्‌बोधन और आह्वान करने वाला स्वयं को भी शामिल करे। वरना वह उपदेश मात्र बनकर रह जाएगा। कविता के आरंभिक दो छंदों में लगता है जैसे कवि जनता को उपदेश दे रहा है, लेकिन अंतिम अनुच्छेद में ऐसा नहीं है। दरअसल, निराशा, आलस एवं अकर्मण्यता से ग्रस्त देश की जनता को कवि जगाने की कोशिश कर रहा है। जब जनता उत्साह से भरकर देश के विकास के लिए आगे बढ़ती है, तो उसके साथ कवि भी हो लेता है। इसलिए यह कविता आह्वान की कविता है।

अब उपर्युक्त बातों के आधार पर इस कविता की भाषा–शैली पर ध्यान दीजिए। इसमें आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो, जो तुम्हारे पीछे थे, आगे बढ़ रहे हैं, भाग्य के भरोसे मत रहो, आओ, मिलें साधक बनें– ये सभी पद आह्वान की शैली के सूचक हैं। यह शैली सुनने वाले में जोश और उत्साह भरती है, ऐसा जोश और उत्साह कि वह बड़े–से–बड़े पहाड़ से टक्कर ले सके। देश की तरक्की के लिए हमें ऐसे ही उत्साह की आवश्यकता पड़ती है।

टिप्पणी

## पाठगत प्रश्न-4.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. हमारे देश की क्या विशेषता है?

(क) यहाँ प्राचीन काल में औद्योगिक क्रांति हुई। ☐

(ख) यहाँ अनेक धर्मों–संप्रदायों के लोग रहते हैं। ☐

(ग) यहाँ के लोगों ने दूसरे देशों पर शासन किया। ☐

(घ) यहाँ धर्म के आधार पर एकरूपता है। ☐

2. सुख–शांतिमय उद्देश्य क्या है?

(क) आज़ादी और खुशहाली ☐

(ख) उद्यम और आराम। ☐

(ग) घोर परिश्रम ☐

(घ) शांति के लिए प्रार्थना ☐

3. 'बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो?' पंक्ति का क्या आशय है?

(क) अनेक प्रकार के फूलों की माला बननी चाहिए। ☐

(ख) अनेकता होने पर भी एकता हो सकती है। ☐

(ग) विविधता एकता में बाधक है। ☐

(घ) सभी को एक ही तरह से रहना चाहिए। ☐

## 4.4 योग्यता-विस्तार

काव्यांश 'भारत भारती' नामक काव्य से लिया गया है जिसके रचनाकार राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक काल के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि रहे हैं। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले के चिरगाँव नामक स्थान में 1886 ई. में हुआ। इन्होंने लगभग चालीस मौलिक तथा छह अनूदित पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें 'रंग में भंग', 'भारत भारती', 'साकेत', 'यशोधरा, 'द्वापर', 'जयद्रथ वध', 'जय भारत', 'विष्णुप्रिया', 'पंचवटी', 'प्रदक्षिणा' आदि उल्लेखनीय हैं।

सबसे पहले 'भारत भारती' ने ही गुप्त जी को ख्याति दिलाई। इस पुस्तक ने हिंदी भाषियों में अपनी जाति और देश के प्रति गौरव और गर्व की भावनाएँ विकसित कीं और तभी से ये राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हुए। इनकी अनेक अन्य रचनाएँ भी राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत हैं।

खड़ी बोली के स्वरूप को निखारने में गुप्त जी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। आज हम जिस हिंदी भाषा के उत्तराधिकारी हैं, उसे काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले प्रथम कवि गुप्त जी ही थे।

## आपने क्या सीखा

- भाग्य भी उसी का साथ देता है जो परिश्रमी तथा कर्मशील होते हैं। इसलिए व्यर्थ बैठकर समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।
- उद्यम अर्थात् प्रयास से ही सफलता प्राप्त होती है, उसे बैठे–ठाले प्राप्त नहीं किया जा सकता।
- जिन लोगों ने भी विकास किया है, वे परिश्रमी और संघर्षशील थे, अतः उनसे प्रेरणा लेकर कार्य करना चाहिए। असफलता के लिए भाग्य को दोषी नहीं मानना चाहिए।
- जिस प्रकार तेल के बिना दीपक नहीं जल सकता, साँचे के बिना मूर्ति नहीं बन सकती, वैसे ही कर्म और योजना के बिना जीवन में कुछ प्राप्त नहीं किया जा सकता।
- भारत अनेकता में एकता वाला देश है। यहाँ पर अनेक धर्मों, संप्रदायों और जातियों के लोग रहते है, लेकिन इनकी अनेकता देश की एकता में बाधक नहीं। सभी लोग देश के लिए एक होकर उसका विकास कर सकते हैं।
- 'भारत भारती' मैथिलीशरण गुप्त का ऐसा काव्य है जिससे देशवासियों को अंधकार और निराशा से जूझने की प्रेरणा मिलती है।
- इस काव्यांश की भाषा ओजपूर्ण एवं उद्बोधनपरक है।
- रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान का एकरूप वर्णन किया जाता है।

## पाठांत प्रश्न

1. भाग्यवादी किसे कहते हैं? क्या मनुष्य को भाग्य के सहारे ही आगे बढ़ना चाहिए?
2. पिछड़े देश और समाज भी हमसे आगे निकल गए, आपके विचार से इसका क्या कारण हो सकता है?
3. 'पाठ पौरुष का पढ़ो' कथन से कवि का क्या आशय है?
4. कवि देशवासियों का आह्वान कर उनसे क्या आशा करता है?
5. 'विविध सुमनों की एक माला' से क्या तात्पर्य है और यह उदाहरण क्यों दिया गया है?

6. काव्य–सौंदर्य स्पष्ट दीजिए–
   पर कर्म–तैल बिना कभी विधि–दीप जल सकता नहीं,
   है दैव क्या? साँचे बिना कुछ आप ढल सकता नहीं।।
7. कवि देशवासियों को क्या आत्मबोध कराना चाहता है? क्या देश के प्रति हमारे भी कुछ कर्त्तव्य हैं? उल्लेख कीजिए।
8. देश के विविध धर्मों/संप्रदायों के बीच पारस्परिक एकता का महत्त्व समझाइए।
9. सांप्रदायिक समस्या के समाधान के लिए कोई दो उपाय सुझाते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचारपत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
10. मैथिलीशरण गुप्त की एक अन्य कविता की नीचे लिखी पंक्तियों का अर्थ लिखिए। बताइए ये पंक्तियाँ कविता की किन पंक्तियों से मिलती जुलती हैं?

    नर हो न निराश करो मन को।
    कुछ काम करो, कुछ काम करो।
    जग में रहकर कुछ नाम करो।।
    यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो,
    समझो जिससे यह व्यर्थ न हो।

11. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर उस पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

    हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार
    उषा ने हँस अभिनंदन किया और पहनाया हीरक हार।
    जगे हम लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक,
    व्योम तम–पुंज हुआ सब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।

(i) भारत का अभिनंदन किसने और कहाँ किया?

(ii) 'जगे हम' कथन में 'हम' कौन हैं?

(iii) किस पंक्ति का आशय है कि भारत ने सारे संसार में ज्ञान का प्रकाश फैलाया।

(iv) ज्ञान का प्रकाश फैलने से संसार पर क्या प्रभाव पड़ा?

## उत्तरमाला

**पाठगत प्रश्न-4.1**

1. क, 2. ख 3. ख

**4.2** 1. घ 2. क

3. क. परिश्रम, ख. हम स्वयं, ग. तेल, दीप, घ. मूर्ति, साँचा

**4.3** 1. ख 2. क 3. ख